GENIUS HIGH SCHOOL – BHONGIR

Class : IX Sub : Hindi Marks : 10

I. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–** 5m

हमारी देशभक्ति धूल को माथे से न लगाए तो कम-से-कम उस पर पैर तो रखे। किसान के हाथ-पैर, मुँह पर छाई हुई यह धूल हमारी सभ्यता से क्या कहती है? हम काँच को प्यार करते हैं, धूलि भरे हीरे में धूल ही दिखाई देती है, भीतर की कांति आँखों से ओझल रहती है, लेकिन ये हीरे अमर हैं और एक दिन अपनी अमरता का प्रमाण भी देंगे। अभी तो उन्होंने अटूट होने का ही प्रमाण दिया है–"हीरा वही घन चोट न टूटे।" वे उलटकर चोट भी करेंगे और तब काँच और हीरे का भेद जानना बाकी न रहेगा। तब हम हीरे से लिपटी हुई धूल को भी माथे से लगाना सीखेंगे।

1. लेखक देशभक्ति का हवाला देकर हमसे क्या अपेक्षा रखता है?
2. 'हमें धूलि भरे हीरे में धूल दिखाई देती है' – व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।
3. अमर हीरे किन्हें कहा गया है?
4. 'हीरा वही घन चोट न टूटे' का आशय स्पष्ट कीजिए
5. अखाड़े की मिट्टी की क्या विशेषता होती है?

II. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 5m

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली जीवन के लिए घोर अभिशाप सिद्ध हो रही है। शिक्षा मनुष्य को सुसंस्कृत एवं स्वावलंबी बनाने का साधन होना चाहिए, किंतु वर्तमान शिक्षा में यह गुण नहीं है। आज का सुशिक्षित युवक वर्ग न केवल दूसरों के लिए, बल्कि स्वयं अपने लिए भी दुखदायी बन रहा है। देश में बेरोजगार इंजीनियरों, वकीलों, वैज्ञानिकों तथा डॉक्टरों की विशाल संख्या देश के लिए अभिशाप बन गई है। शिक्षा ने उनमें 'सादा जीवन, उच्च विचार' और सेवा-वृत्ति उत्पन्न नहीं की। अन्यथा वे गाँवों को स्वर्ग बनाकर राष्ट्र-हित कर पाते, देश की सच्ची सेवा कर पाते।

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में नगरोचित तत्त्वों की प्रधानता है, जबकि भारत माता ग्रामवासिनी है। ग्राम-विकास की योजनाओं को शहरी शिक्षण तत्त्व कैसे पूरा कर सकते हैं? उलटा इससे गाँव की ओर से विमुखता ही जाग्रत हुई है।

भारत जनतंत्र का उपासक है। यह जीवन-शैली भारत ने अपनाई है। जनता की शिक्षा का माध्यम जनता की भाषा होनी चाहिए। विदेशी भाषा के माध्यम से भारत का नागरिक विदेशी आचार-विचार, रहन-सहन, जीवन-पद्धति, सभ्यता और संस्कृति को ग्रहण करेगा। हम उपनिषदों और वेदों का आदर इसलिए नहीं करते कि वे हमारे दर्शन-ग्रंथ हैं, ज्ञान के आगार हैं, अपितु इसलिए करते हैं कि मैक्समूलर और ब्लावेट्स्की ने इनकी प्रशंसा की है। हम अपने दर्शन-ग्रंथों को संस्कृत में नहीं, अंग्रेज़ी के माध्यम से पढ़कर गौरवान्वित होते हैं।

1. वर्तमान शिक्षा-प्रणाली जीवन के लिए घोर अभिशाप कैसे सिद्ध हो रही है?
2. वर्तमान शिक्षा-प्रणाली ने युवक वर्ग पर क्या प्रभाव डाला है?
3. वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में किन तत्वों की प्रधानता है? इसका क्या परिणाम हुआ
4. शिक्षा का माध्यम जनता की भाषा ही क्यों होनी चाहिए?
5. विदेशी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने से क्या प्रभाव पड़ेगा?